दिनांक 12 फरवरी, 2011 को चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में आयोजित दीक्षान्त समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्‌बोधन

मुख्य अतिथि, भारत के उच्चतम न्यायालय के जज सम्माननीय न्यायमूर्ति डा0 मुकुन्दकम शर्मा, प्रो0 एन0के0 तनेजा, कुलपति, विश्वविद्यालय के समस्त संकायों के अध्यक्ष, कार्य परिषद एवं विद्या परिषद के सदस्यगण, पत्रकार बन्धुओं, छात्र–छात्राओं, देवियों और सज्जनों,

ऐतिहासिक, पौराणिक एवं सांस्कृतिक धरोहर से समृद्ध, सन् 1857 के स्वतंत्रता आन्दोलन के हृदय स्थल, बदलते समय के

साथ प्रगति और परिवर्तन को आत्मसात करने वाले इस नगर में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के 23वें दीक्षान्त समारोह में आपके बीच आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। औद्योगिक एवं कृषि सम्पदा से सम्पन्न इस क्षेत्र का राष्ट्र–निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ के युवा वर्ग की अपार ऊर्जा देश के उज्जवल भविष्य की आकांक्षा रखने वाले नागरिकों के सपनों को पूरा करने का आश्वासन देती प्रतीत होती है।

भारतीय राजनीति में किसानों का प्रतिनिधित्व करने वाले शलाका पुरूष चौधरी चरण सिंह जी के नाम पर स्थापित यह विश्वविद्यालय नित्य नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। चौधरी

साहब ने अपना सम्पूर्ण जीवन देश के किसानों की उन्नति के लिए समर्पित किया तथा आज भी वे अपनी सादगी एवं सिद्धान्तों के लिए याद किये जाते हैं। स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय जेल में लिखित उनकी पुस्तक 'शिष्टाचार' भारतीय संस्कृति और समाज में शिष्टाचार के नियमों का एक बहुमूल्य दस्तावेज है और आज भी हमारे युवाओं के लिए प्रासंगिक है।

संतोष की बात है कि बदलती आवश्यकताओं के मुताबिक सजग रहकर यह विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रमों को सतत् रूप से उच्चीकृत करता रहा है, जिससे छात्रों को पारम्परिक ज्ञान के

साथ विषय के नवीनतम आयामों एवं सामयिक दिशाओं–दशाओं का ज्ञान भी होता रहे।

इस विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए शिक्षकों को प्रेरित व प्रोत्साहित करने का भी सराहनीय कार्य किया है। मैं आशा करता हूँ कि इस दिशा में किया गया प्रयास एक निरन्तर प्रक्रिया बना रहेगा।

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई है कि इस विश्वविद्यालय में अकादमिक एवं प्रशासनिक संचालन के अंतर्सम्बन्धों को ध्यान में रखकर सूचना प्रौद्योगिकी का सम्यक उपयोग करते हुए विश्वविद्यालय की संरचना व कार्य प्रणाली को पारदर्शी बनाया

गया है। इसका परिणाम प्रवेश, परीक्षा एवं मूल्यांकन व्यवस्थओं में स्वतः ही दृष्टिगत होता है। इन ठोस एवं सकारात्मक प्रयासों के कारण सत्र नियमितिकरण में भी सफलता प्राप्त हुई है। पूरे विश्व से जुड़े आज इस विश्वविद्यालय क्षेत्र का दूरस्थ गांव भी विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में नवीनतम जानकारी प्राप्त कर सकता है। मुझे आशा है कि आगे भी यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय एवं सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप अपनी कार्य प्रणाली में गुणकारी परिवर्तन लायेगा तथा इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी को और अधिक महत्व देगा।

विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह एक विशिष्ट एवं गौरवशाली परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है। प्राचीन काल में भी गुरूकुल में जब विद्यार्थी की शिक्षा पूर्ण हो जाती थी तो गुरू उसे जीवन का मूल मंत्र देते हुए दीक्षित करता था। शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है। यह औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से जीवन पर्यन्त चलती रहती है। आज केवल यहां उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं के लिए एक अध्याय के समापन का क्षण है। विद्या से ही मानव समाज का सर्वांगीण विकास सम्भव है और यह परम लक्ष्य 'मुक्ति' की ओर प्रेरित करती है– सा विद्या या विमुक्तये। जिसके माध्यम से हम रोग, शोक, द्वेष, पाप, दीनता, दासता,

गरीबी, अभाव, अज्ञान, दुर्गुण, कुसंस्कार आदि से मुक्ति प्राप्त कर सकें, वही सच्ची विद्या है। नीति शास्त्र में विद्या के प्रतिफल एवं स्वरूप के सम्बन्ध में कहा गया है ——

विद्या ददाति विनयं, विनयं ददाति पात्रतां।
पात्रत्वां धनमाप्नोति, धनात धर्मततो सुखम्।।

अर्थात् विद्या विनय प्रदान करती है, विनय से पात्रता मिलती है, पात्रता से धन प्राप्त होता है तथा धन के द्वारा धर्म का कार्य सम्पन्न किया जाता है तथा इन सभी प्रयोजनों की उपलब्धि से सुख की प्राप्ति होती है। शिक्षा का वास्तविक तात्पर्य व्यक्तित्व के समग्र विकास से है। शिक्षा के समग्र महत्व को रेखांकित करते

हुए गांधी जी ने कहा था कि – जो शिक्षा चरित्रवान न बना सके, मन–इन्द्रियों को वश में रखने में सक्षम न बना सके, आत्म विश्वास न उत्पन्न कर सके, स्वावलम्बी न बना सके, उस शिक्षा में चाहे कितनी जानकारी का भण्डार, तार्किक विशेषता अथवा पाण्डित्य हो, वह अपूर्ण है। शिक्षा की सार्थकता इसमें निहित है कि वह उपयोगी और अनुपयोगी का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करके अनुपयोगी को त्यागने तथा उपादेय को ग्रहण करने की दृष्टि का विकास करे।

दीक्षान्त उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिये आज का दिन शिक्षा व्यवस्था के मूल्यांकन

करने का भी एक विशेष अवसर है। विद्यार्थियों को जिस प्रकार की शिक्षा एवं संस्कार दिये गए हैं, वे उन्हें अनुशासन, चरित्र, सदाचार, सत्यनिष्ठा, सहृदयता, स्वावलम्बन आदि सद्‌गुण प्रदान करते हुए जीवन, समाज, राष्ट्र एवं समस्त विश्व के प्रति अपना दायित्व बोध भी कराते हैं या नहीं। योग्य, दक्ष एवं चरित्रवान विद्यार्थी गुरू को गौरव एवं सुख प्रदान करता है एवं उनके कृतत्व के प्रति समस्त समाज को नतमस्तक करता है।

वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के केन्द्रों में हमारे शिक्षकों को निरन्तर परिवर्तनशील एवं प्रतिस्पर्धात्मक विश्व की आवश्यकताओं के अनुरूप नूतन आयामों पर आधारित उत्कृष्ट शिक्षा उपलब्ध

करानी होगी। विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय शोध के लिये प्रेरित करना होगा, जिससे हमारे विद्यार्थी अपनी मेधा, प्रतिभा, कर्मठता एवं दक्षता द्वारा समस्त विश्व को नेतृत्व प्रदान कर वैश्विक पटल पर भारत की अग्रणी भूमिका का स्वप्न साकार कर सकें।

प्रिय छात्रों, आज आप एक महत्वपूर्ण पड़ाव को पार करके जीवन का एक नया अध्याय प्रारम्भ करने जा रहे हैं। इस अवसर पर मैं आपको स्मरण कराना चाहूंगा कि आपके ऊपर अब स्वयं अपने एवं परिवार के प्रति उत्तरदायित्व से आगे बढ़कर समाज के मूल्यों के संरक्षण और अभिवर्द्धन का भी दायित्व है। आपकी दृष्टि 'स्व' से ऊपर उठकर लोक कल्याण की होनी चाहिए। ऐसे में

आपकी शिक्षा, आत्मबल एवं सकारात्मक चिन्तन ही आपके सम्बल होंगे और यही आपको विपरीत परिस्थितियों में भी साहसपूर्वक अडिग रहने की प्रेरणा प्रदान करेंगे। आपको ज्ञानोपार्जन की इच्छा निरन्तर जागृत रखनी होगी एवं वास्तविक जीवन की घटनाओं से निरन्तर सीखते हुए अपने ध्येय की प्राप्ति की ओर अग्रसर होना होगा।

मैं इस दीक्षान्त समारोह में उपाधि प्राप्त करने वाले सभी छात्र–छात्राओं को हार्दिक बधाई देते हुए मंगलकामना करता हूँ कि आपका भविष्य उज्जवल हो तथा जीवन सुखमय सार्थक एवं सफल हो। आप सभी प्रकार की संकीर्णताओं यथा––धर्म, जाति,

सम्प्रदाय, क्षेत्र, भाषा आदि से ऊपर उठकर श्रेष्ठ मानव बने। मेरा आपको आशीर्वाद है कि आपका जीवन कल्याणकारी हो तथा आप गौरवशाली भारतीय समाज के निर्माण के उद्यम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करें।

धन्यवाद—नमस्कार।